अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्य : एक अध्ययन

(1980 से 2010 तक)

संस्कृत विषय में पी-एच०डी० की उपाधि हेतु
शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित
रूपरेखा

2016

शोध निर्देशिका

डॉ० (श्रीमती) अनीता
असि० प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, कला संकाय

शोधार्थिनी

कविता सिंह

विभागाध्यक्ष

प्रो० (श्रीमती) उर्मिला आनन्द
संस्कृत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख

प्रो० (श्रीमती) रागिनी रॉय
चित्रकला विभाग, कला संकाय

अध्ययन का क्षेत्र - आधुनिक संस्कृत साहित्य

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा-282005

आदिकाल से ही तपश्चर्या, साधना एवं निष्ठा की भाषा रही देववाणी संस्कृत, अपने विशाल कलेवर तथा विषय वैविध्य के लिए विश्व-प्रसिद्ध रही है। यही कारण है कि आज विश्वभर की भाषाओं को एकसूत्र में बाँधने वाली भाषा के रूप में इसकी प्रसिद्धि है। वेद, पुराण, स्मृति तथा महाकाव्यों से लेकर वर्तमान में प्रचलित विविध विधाओं तक इसकी अजस्त्र धारा प्रवाहित है। मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक की प्रसिद्ध विधाओं में दूतकाव्य, काव्य की एक महत्वपूर्ण विधा रही है। ऋग्वेद में उल्लिखित एक प्रसंग में रात्रि-देवी (5/61/17) को दौत्यकर्म के लिए प्रेषित किया है। अचेतन पदार्थ का प्रणय-प्रसंग में दौत्यकर्म करने का यह वैदिक उदाहरण इस विषय का प्रथम दृष्टांत है। सम्भव है कवि कालिदास ने अपने मेघदूत की प्रेरणा उक्त वैदिक सूक्त से ही ग्रहण की हो।

ऋग्वेद के 'सरमा-पणि संवाद' (19/8/108) में भी सरमा, पणियों की संदेशवाहिका बनकर इन्द्र के समीप जाती है।

आचार्य विश्वनाथ ने संदेश का लक्षण दिया है-

सन्देशस्तु पोषितस्य स्ववार्ता प्रेषणं भवेत्।

(साहित्य दर्पण 3/49)

अर्थात् दूत द्वारा सन्देश सम्प्रेषण ही इन दूतकाव्यों का मुख्य विषय रहा है, इसी आधार पर इन काव्यों को 'सन्देशकाव्य' अथवा 'दूतकाव्य' नामों से अभिहित किया जाता है।

आचार्य विश्वनाथ ने दूत काव्य का लक्षण दिया है-

खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि च।

(साहित्य दर्पण 6/329)

प्रो0 रहसबिहारी द्विवेदी के अनुसार दूतकाव्य का लक्षण है-

दूतं कृत्वा निसर्गाङ्कं नरं वा पक्षिणं पशुम्।
स्वप्रियं प्रति सन्देशः प्रेष्यते दूतसंज्ञके।।
अवाचोऽव्यक्तवाचोऽपि वर्ण्यन्तां दूतरुपिणः।

न प्रयान्तु न सन्देशं प्रियार्थं श्रावयन्तु ते।।
मेघदूते भवेन्नाम दूतो मेघे न किन्तु सः।
निःशब्दो यक्षिणीं वक्ति कालिदासस्य वर्णने।।
विप्रलम्भात्मकान्येव प्रायेणैतानि चासते।
भुवो रागश्च राष्ट्रस्य भक्तिर्विन्यस्यतेऽधुना।।

ये विधा दक्षिण में सन्देशकाव्य एवं उत्तरभारत में दूतकाव्य नाम से पहचानी जाती है। दोनों का अर्थभाव एक समान है, कुछ अन्तर है तो दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति और बाह्य रूप में।

दूतशब्द की व्यत्पत्ति- दु गतौ-क्त (त) = दूत (अमरकोश 2/6/16) दूतानिभ्यां दीर्घश्च (अमर कोश 3/90) सूत्र द्वारा दु के उ का दीर्घ होकर दूत शब्द व्युत्पन्न होता है।

अमरकोश में दूत का अर्थ स्यात्सन्देशहरो दूतः (अमरकोश 2/6/16) किया गया है।

आचार्य हेमचन्द्र ने 'अभिधान चिन्तामणि में दूत की परिभाषा इस प्रकार दी है-

दूत सन्देशहारकः (अभिधानचिन्तामणि- 3/396)
'दूयतेऽनेन यथोक्तवादित्वात् पर इति दूतः 'शीरी'
सन्देशं मुख्याख्यानं हरति संदेशवाहकः।

दूत शब्द की इस व्युत्पत्ति के आधार पर सन्देशहारक (किसी एक व्यक्ति के सन्देश को दूसरे अभीष्ट व्यक्ति तक पहुँचाने वाले व्यक्ति) को दूत कहते हैं। यह दूत नायक एवं नायिका की मनः स्थिति का पता ही नहीं लगाता, अपितु दोनों के मन में प्रेमभाव भी उदीप्त करने का प्रयास करता है, साथ ही दूत नायक-नायिका के सम्मिलन-सन्देश का एवं उन दोनों के मिलन-स्थान का भी संकेत करता है। आचार्य विश्वनाथ ने इस दूत का त्रिविध भेद स्पष्ट करते हुए लिखा है-

'निसृष्टार्थो-मितार्थश्च तथा सन्देशहारकः।
कार्यप्रेष्यस्त्रिधा दूतो दूत्यश्चापि तथाविधाः।।'

(साहित्य दर्पण-3/47)

दूत उसे कहते हैं, जिसे त्रिविध कार्यो हेतु यतस्तत: भेजा जाता है। ये दूत तीन प्रकार के हैं- (1) निसृष्टार्थ (2) मितार्थ (3) सन्देशहारक

'उभयोर्भावमुन्नीय स्वयं वदतिचोत्तरम्।

सुश्लिष्टं कुरुते कार्यं निसृष्टार्थस्तु स स्मृतः।।'

(साहित्य दर्पण 3/48)

निसृष्टार्थ दूत वह है, जो दोनों (नायक-नायिका) के मन की बात समझकर स्वयं सभी प्रश्नों का समाधान कर लेता है और प्रत्येक कार्य को स्वयं सम्पादित कर लेता है।

मितार्थभाषी कार्यस्य सिद्धकारामितार्थकः।

(साहित्य दर्पण 3/49)

मितार्थ दूत वह है जो बात तो बहुत ही कम करे परन्तु जिस कार्य के लिए भेजा गया हो उस कार्य को अवश्य सम्पादित करे।

यावद्भाषितसन्देशहारः सन्देशहारकः।

(साहित्य दर्पण 3/49)

सन्देशहारक दूत वह है, जो उतनी ही बात करे जितनी उसे बतायी गई हो।

सन्देश-सम्प्रेषण की यह कल्पना वेद से लेकर वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा जैन एवं बौद्धग्रन्थों में मिलती है। इसके अतिरिक्त संदेशात्मक कथाएँ पौराणिक ग्रन्थों से लेकर लोकसाहित्य तक में बहु-प्रचलित रही हैं।

सुख या दु:ख की भावमयी अवस्थाओं का चित्रण ही दूतकाव्यों का मुख्य प्रतिपाद्य होता है। दु:खात्मक या सुखात्मक भावों की तीव्रतम अनुभूति दूत काव्यों को जन्म देती है, इनमें अभिव्यक्तिपक्ष भी उतना ही उत्कृष्ट होता है जितना अनुभूतिपक्ष।

संस्कृत दूतकाव्यों ने अपनी अभिनव शैली की दीर्घ परम्परा से संस्कृत साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इनमें गीतिकाव्य की उन समस्त विशेषताओं कवि-हृदय

की वैयक्तिकता अर्थात् हास-अश्रु तथा सुख-दुःख के साथ-साथ भावों और कल्पनाओं की स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं जिन्हें कवि सहृदय श्रोता-पाठक के सम्मुख अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

इनमें कोमल पदावली के साथ संगीतमय छन्दों का प्रयोग भी निहित रहता है। इनके वर्णन विशेषकर श्रृंगार, नीति, वैराग्य तथा प्राकृतिक दृश्यों के होते हैं। ये बाहरी रूप से जितने अभिराम होते हैं, उतने ही आभ्यन्तर रूप से सुन्दर और रसाप्लावित होते हैं। परिणामतः इनमें निहित कोमलभावों की मधुरिमा प्रत्येक सहृदय को हठात् अपनी ओर आकृष्ट करती है। भावात्मक रंग में रंगे हुए प्रणय के प्रसंग में अचेतन-चेतन पदार्थों के द्वारा अपने प्रिय के पास सन्देश भेजना ही इन दूतकाव्यों का वैशिष्टिय है। जिसे कालिदास ने अपने 'मेघदूत' नामक काव्य द्वारा सर्वप्रथम अभिव्यक्त किया और यहीं से स्फूर्ति ग्रहण कर उत्तरवर्ती समस्त दूतकाव्यों के रचयिताओं ने इस अभिनव परम्परा का प्रवर्तन किया।

संस्कृत दूतकाव्य परम्परा के चार प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं- शुद्धश्रृंगारपरक, रामकथाश्रित, कृष्णकथाश्रित तथा शान्तरस प्रधान दूतकाव्य।

अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्यों में कुछ प्रमुख दूतकाव्य इस प्रकार हैं:- वासुदेवकृत भृंगसन्देशः, विष्णुदास-कृत-'मनोदूतम्', भोलानाथ-कृत 'पान्थदूतकाव्यम्' महालिंगशास्त्री-कृत 'शुनकदूतम्', पं रामवतार शर्मा-कृत 'मुद्गरदूतम्', दयानिधिमिश्र-कृत 'सूर्यदूतम्' श्री गोपेन्द्रनाथ गोस्वामी-कृत 'पादपदूतम्' धोयी-कृत 'पवनदूतम्' श्रीरूद्रन्यायपंचानन-कृत 'पिकदूतम्, श्रीकृष्णन्यायपंचानन-कृत 'वातदूतम्' श्री-जम्बूकवि विनयप्रभुजी-कृत 'चन्द्रदूतम्' उदण्डकवि-कृत 'कोकिलसन्देश', प्रबोध कुमार त्रिपाठी-कृत मलयदूतम् तथा स्वप्नदूतम्, चिन्तामणि सहत्रबुद्धे-कृत 'काकदूतम्' श्री वागीश शर्मा-कृत 'चकोरदूतम' महालिंगशास्त्री -कृत 'भ्रमरसंदेश', रूद्रदेव त्रिपाठी-कृत 'पत्रदूतम्', प्रो0 दिनेशचन्द्र पाण्डेय-कृत 'मित्रदूतम्, इच्छाराम द्विवेदी'-कृत 'मित्रदूतम्' अभिराजेन्द्र मिश्र-कृत मृगांकदूतम्, प्रबोधकुमार मिश्र- कृत स्वप्नदूतम्, रामाशीष पाण्डेय-कृत मयूखदूतम्, वनेश्वर पाठक-कृत प्लवङ्दूतम्, श्री नृसिंहप्रसादसेन-कृत पान्थदूतम्, डॉ0 परमानन्दशास्त्री कृत-गन्धदूतम्, जगद्गुरु रामभद्राचार्य-कृत 'भृङ·गदूतम्' इत्यादि।

अभिराम तथा कोमलभावों की मधुरिमा लिए दूतकाव्यविधा ने मुझे अत्याधिक आकर्षित किया है। दूतकाव्य में निहित अनुभूति की सघनता और भावप्रबलता ने मुझे अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्यों के अध्ययन हेतु प्रेरित किया है। आरम्भ से ही काव्यविधा में मेरी रूचि रही है, इसीलिए मैंने **अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्य : एक अध्ययन (1980 से 2010 तक)** विषय का शोधकार्य हेतु चयन किया है।

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के समग्र दूतकाव्यों को न लेकर मैंने विषय विस्तार के भय से उपर्युक्त कालावधि के प्रकाशित दूतकाव्यों को ही अपने शोध का विषय बनाया है। मेरी दृष्टि में **अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्य : एक अध्ययन (1980 से 2010 तक)** इस विषय पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है तदर्थ मैंने इस विषय का चयन शोध हेतु किया है।

दूतकाव्य परम्परा में अब तक हुए शोधकार्यों का विवरण इस प्रकार है—

1. सन्देशकाव्य परम्परा में उद्धवसन्देश: एक अध्ययन–2012–साधना शुक्ला–वीरबहादुर पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर (उ0प्र0)

2. मेघदूत एवं सारिका संदेश का काव्यशास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन–2015–सुमन शुक्ल–बुन्देलखण्ड वि0वि0 झाँसी।

3. संस्कृत में दूतकाव्यों का विकास–1990–ललितासेन–गुप्त, जादवपुर।

शोधप्रबन्ध लिखते समय मुख्य रूप से अन्तर्वस्तु–विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

प्रो0 उर्मिला आनन्द विभागाध्यक्ष तथा विभाग के अन्य सुधी प्राध्यापक–जनों ने मुझे इस विषय पर कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया है, मैं ह्रदय से उनकी आभारी हूँ। संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका डॉ0 अनीता जी के परामर्श से मुझे प्रचुर बौद्धिक–बल एवं मार्गदर्शन मिला है तदर्थ उनके प्रति मेरा आभार।

असीम के चरणों में ससीम वन्दन करते हुए विद्वज्जनों से आग्रहपूर्ण निवेदन एवं उत्कट अपेक्षा है कि सह्रदय सुधी–जन मुझे **अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्य : एक अध्ययन (1980 से 2010 तक)** विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे तथा क्षमाभाव से त्रुटियों को भुलाकर मेरा मार्गदर्शन करेंगे।

अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्य : एक अध्ययन

(1980 से 2010 तक)

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय- अर्वाचीन संस्कृत दूतकाव्य : स्वरूप व परम्परा

1.1 शोध-विषय तथा शोध-दृष्टि

1.2 सम्बन्धित विषय पर अब तक हुए अनुसंधानों का अवलोकन

1.3 संस्कृत दूतकाव्य : लक्षण तथा स्वरूप

1.4 संस्कृत दूतकाव्य परम्परा

द्वितीय अध्याय- अध्येय संस्कृत दूतकाव्य तथा काव्यकारों का परिचय

	कृतिकार	कृति	प्रकाशन वर्ष
1.	श्री नित्यानन्दशास्त्री	हनुमद्दूतम्	सन् 1985 ई०
2.	इच्छारामद्विवेदी	दूतप्रतिवचनम्	सन् 1986 ई०
3.	हरिनारायण दीक्षित	श्रीहनुमद्दूतम्	सन् 1987 ई०
4.	कृपारामत्रिपाठी	तरंगदूतम्	सन् 1988 ई०
5.	रामचन्द्र हरिशरण शांडिल्य	कामदूतम्	सन् 1988 ई०
6.	वसन्तत्र्यंबकशेवडे	अभिनवमेघदूम्	सन् 1990 ई०
7.	पत्रदूतम्	पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय	सन् 1999 ई०
8.	जगद्गुरू रामभद्राचार्य	भृङगदूतम्	सन् 2004 ई०
	इत्यादि		

तृतीय अध्याय- अध्येय दूतकाव्यों का वैशिष्ट्यपरक अध्ययन

3.1 अध्येय दूतकाव्यों में दौत्यकर्म

3.2 प्रकृति-चित्रण

3.3 तीर्थस्थल-वर्णन तथा आँचलिक उत्सव-वर्णन

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय- अध्येय दूतकाव्यों में निहित भाव-सौन्दर्य

4.1 श्रृंगार-वर्णन

4.2 भक्ति तत्त्व-निरूपण

4.3 नीति तथा वैराग्य

4.4 पूर्ववर्ती व अध्येय दूतकाव्य

निष्कर्ष

पंचम अध्याय- अध्येय कृतियों का साहित्यिक अध्ययन

5.1 रस-निरूपण

5.2 छन्द-विधान

5.3 अलंकार-निरूपण

5.4 भाषागत सौन्दर्य तथा नवीन प्रयोग

उपसंहार- अध्ययन का निष्कर्ष तथा प्रासंगिकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन
1. ऋग्वेद	सम्पादक	संस्कृति संस्थान, बरेली 1962
2. रामायण	महर्षि वाल्मीकि	गीता प्रेस, गोरखपुर
3. श्रीमद्भागवद्	महर्षि वेदव्यास	गीता प्रेस, गोरखपुर
4. शब्दकोश	शिवराम आप्टे	आप्टे कमल प्रकाशन, नई दिल्ली नवीन संस्करण
5. आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा	श्री केशवराव मुसलगाँवकर	चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी संस्करण 2010
6. आधुनिक गीतिकाव्य	डॉ0 शंकर तिवारी	वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. काव्यात्मक मीमांसा	जयन्त मिश्र	चौखम्बा विद्या भवन 1964
8. दशरूपकम्	श्री धनंजय	साहित्य भण्डार, मेरठ
9. गीतमन्दाकिनी	डॉ0 इच्छाराम द्विवेदी	नागप्रकाशक, बैंग्लो रोड जवाहर नगर, दिल्ली
10. प्रणव रचनावली	डॉ0 इच्छाराम द्विवेदी	प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस 35 टी एक्सटेन्शन उत्तमनगर नई दिल्ली
11. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, षष्ठम् संस्करण
12. संस्कृतवाङ्मय का इतिहास (सप्तम् खण्ड)	सम्पादक डॉ0 जगन्नाथ पाठक	उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊप्रथम संस्करण 2000 ई0
13. संस्कृत के संदेश काव्य	डॉ0 रामकुमार आचार्य अजमेर 1963	संस्कृत विभाग राजकीय कॉलेज
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास	वाचस्पति गैरोला	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, प्रथम संस्करण 1960
15. संस्कृत काव्यकार	हरिदत्त शास्त्री	साहित्य भण्डार, मेरठ, द्वितीय संस्करण 1970
16. संस्कृत कविचर्चा	पं. बलदेव उपाध्याय	मास्टर खिलाड़ीलाल एण्ड संस वाराणसी प्रथम संस्करण 1932